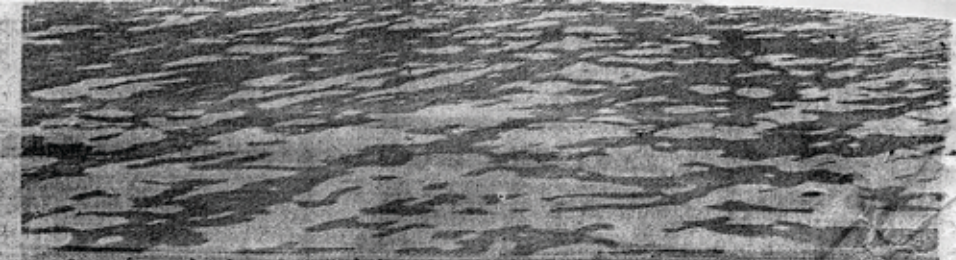

बी.एच.ई.एल. क्षेत्र के करीब 4.2 हेक्टेयर क्षेत्र में बनी है सारंगपानी झील। यह झील प्राकृतिक रूप से वर्षा जल और आसपास के बरसाती पानी से बनी थी। बी.एच.ई.एल. के वरिष्ठ अधिकारी श्री सारंगपानी ने 1964 में इसे विकसित करने का बीड़ा उठाया। तब से ही इसे सारंगपानी नाम मिला। प्रदूषण और कचरे से इसका क्षेत्र भी सिकुड़ने लगा था, लेकिन इसे अब दोबारा विकसित करने का बीड़ा उठाया है बी.एच.ई.एल. प्रशासन ने।

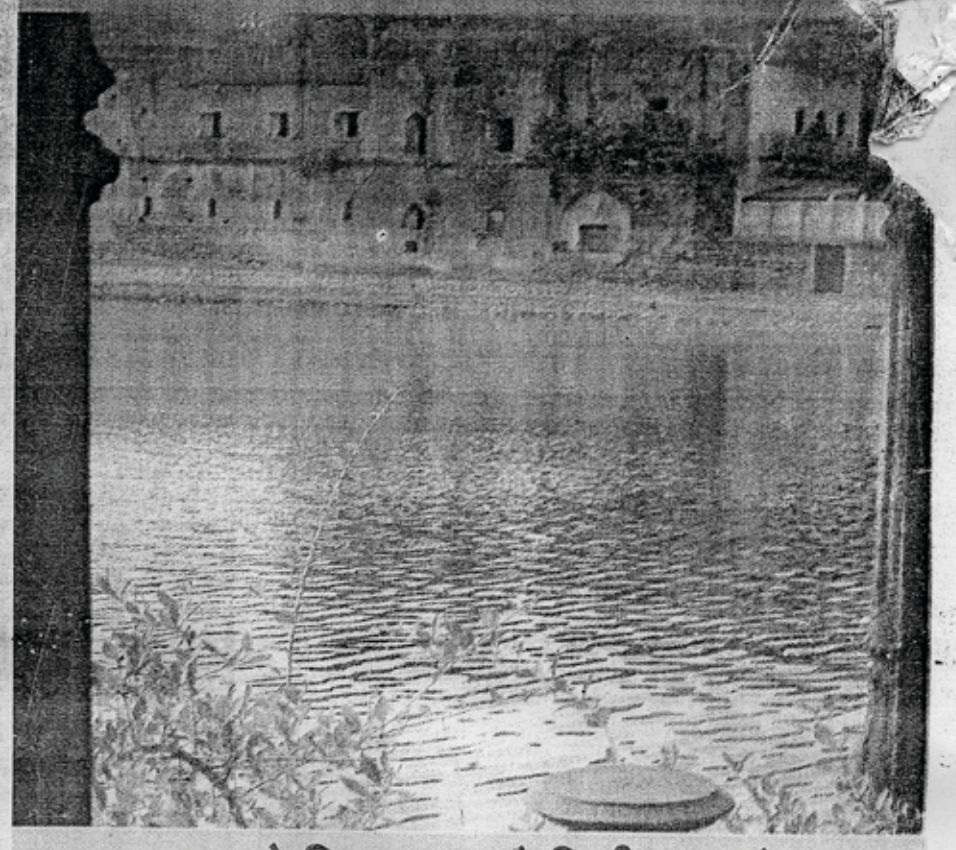

जापान से मिल सकता है वित्तीय सहयोग

झील संरक्षण प्राधिकरण ने हाल ही में राज्य सरकार के माध्यम से केन्द्र सरकार को भोपाल के 10 तालाबों के पर्यावरण संरक्षण संबंधी योजना सौंपी है। 216 करोड़ रु. की इस योजना के लिए जापान इंटरनेशनल को-आपरेटिव एजेन्सी से वित्तीय सहयोग दिलाने की सिफारिश की गई है। यदि वह इस योजना को स्वीकार कर लेता है तो निश्चित ही भोपाल के तालाबों का उद्धार हो जाएगा और सही मायनों में फिर भोपाल कहलाएगा झीलों की नगरी।

भोपाल की झीलें लगातार गन्दगी की शिकार हो रही है। हम भारतीयों की आदत ही है कि हम अपने घर का कचरा उठाकर बाहर फेंक देते है। किसी भी समारोह, आयोजन में जहाँ भीड़ जमा होती है वहाँ आसपास कचरा इकट्ठा कर देते हैं। सरकार को इसके लिए सख्त कदम उठाने चाहिए, इसके लिए जुर्माना अथवा सजा का प्रावधान भी यिका जाना चाहिए, तभी हम अपने पर्यावरण को संरक्षित कर सकते है।

एम.एन. बुच
पर्यावरणविद
(सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी)